शील साहित्य अंक

सम्पादक : शैलेन्द्र चौहान

धरती-९

सामाजिक, वैज्ञानिक साहित्य की प्रतिनि॰ पत्रिका

अनुक्रम

संप्रेषण 5

0 कविताएं

आदमी का गीत 9

जिन्दगी का गीत 11

रोटियों की जंजीर 16

हल की मूठ गहो 20

गजल 21

बीच के लोग 22

लोहा बजेगा 23

चित्रकार से 23

हम और तुम 24

युग गीत 25

मांझी 27

आचरणों की नदी 27

झूला 28

अंगड़ाई 33

शोक गीत 35

दो पैसे का कार्ड 36

ओ नई उम्र के 38

प्रकृति प्रदेश 40

अथ के लिए चलो 41

गीत 41

मैं यहां हूं 42

मठों के देवता डोले 42

सत्य

बरगद के नीचे 51

साथ जुड़ा जा सकता है और शील जी राष्ट्रवादी आंदोलन से जुड़ गये। गांधी जी और राष्ट्रवादी आंदोलन से जुड़ने के बाद सत्याग्रह आंदोलन और तत्कालीन राष्ट्रवादी धारा में उन्होंने जमकर हिस्सा लिया। उनके मन पर 1919 के बैसाखी के दिन हुए जलियांवाला कांड की नृशंसता की छाप थी जिससे अंग्रेजी शासन से उन्हें घृणा हो गई थी वहीं अपने गांव के सामंती अत्याचारों ने उनके मन पर शोषक और शोषित वर्ग के विभाजन को भी साफ साफ समझ लिया था। उस समय के राष्ट्रवादी कवियों मैथिलीशरण गुप्त, बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन', गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' का प्रभाव भी उनके ऊपर था। इस तरह कवि शील को लगा कि गांवों की दारुण स्थिति किसानों की भलाई और स्वतंत्र राष्ट्र की कल्पना गांधी जी से साकार हो सकती है। शील जी कविताएं लिखते और गांवों में जा जाकर राष्ट्रीय चेतना जगाने का प्रयत्न करते।

विवाहोपरांत जीवन यापन की समस्या थी सो नौकरी की। बांदा में नियुक्ति हुई, उन दिनों बच्चन जी ने 'मधुशाला' लिखी थी बड़ी चर्चित थी उन दिनों 'मधुशाला'। शील जी की पत्नी ने कहा गांधी जी आजादी की लड़ाई का नेतृत्व कर रहे हैं। भारत की जनता गुलामी के खिलाफ संघर्ष कर रही है और बच्चन जी 'मधुशाला' लिखकर युवकों को गुमराह कर रहे हैं आप इसके जवाब में कुछ क्यों नहीं लिखते ? जब पत्नी का दबाव काफी बढ़ा तो शील जी ने 'चर्खाशाला' लिखी। परन्तु गांधी जी के दर्शन के अलावा भी शील जी सामंती शोषण और अन्याय के खिलाफ भी सदैव संघर्षरत रहते उनकी कल्पना में सदैव शोषणमुक्त समाज की तस्वीर होती अतः इस तरह की कविताएं भी वे हमेशा लिखते रहते। 'उदय पथ' तथा 'एक पग' संकलनों में उस दौर की वे कविताएं संकलित हैं हालांकि ये संग्रह 'चर्खाशाला' के बाद प्रकाशित हुए। 'चर्खाशाला' की लोकप्रियता और आजादी के आंदोलन में सक्रिय हिस्सेदारी के फलस्वरुप वे जेल गये। बांदा में ही अंग्रेज सरकार ने उन्हें कम्युनिस्ट घोषित कर दिया था 1934 से 37 के बीच ही शील जी का गांधीवाद से मोह भंग होना शुरू हो गया

था। 1942 के आंदोलन के पहले उन्होंने गांधी जी को सम्बोधित कर लिखा—

मांझी भय है गहरा जल है तट अदृश्य है रात
संभलो देखो भंवर निकट है अति सुदूर प्रभात
ये नभ के तारे लहरों में हंस हंस होते लीन
मांझी इस झिलमिल प्रकाश ते खोजो पंथ नवीन

उन्हें लगने लगा था कि गांधी जी और कांग्रेस का रास्ता सही नहीं है। वर्ग संघर्ष जो उन्हें कांग्रेस में दिखा था उन्हें लगा वह मरीचिका थी। कांग्रेस का चरित्र वर्ग संघर्ष का नहीं वरन सामंती गठजोड़ का चरित्र था। आगरा सेंट्रल जेल में साम्यवादी विचारधारा के लोगों से उनका परिचय हुआ। और जेल से बाहर आने पर शील जी साम्यवादी हो चुके थे। उनकी जेल की रचनाओं का संग्रह 'अंगड़ाई' उनके रचनात्मक, वैचारिक विकास को रेखांकित करता है।

इस बीच शील जी की पत्नी और बच्चा अकाल मृत्यु को प्राप्त हुए। मानसिक आघात के इन भयानक क्षणों में भी शील जी विचलित नहीं हुए। 1942 में जेल से छूटने के बाद वे पार्टी के होल टाइमर हो गये। 1946 तक वे होल टाइमर के रूप में काम करते रहे। 1948 में डकैती का आरोप लगाकर कांग्रेसी सरकार ने शील जी को दो वर्ष तक जेल में रखा। 1949 में जेल में लाठी चार्ज हुआ। गांव में जमींदार ने अफवाह उड़ा दी कि उनकी मृत्यु हो गई। इस आघात को सहन न कर पाने के कारण उकके पिता की मृत्यु हो गई। 1950 में जेल से छूटने के बाद शील जी एकदम अकेले हो गये। पारिवारिक दुख और आजाद भारत में उनपर हो रहे तरह तरह के सामंती और सरकारी अत्याचारों से अब किस तरह लड़ा जाये। हुआ वही जो उन्होंने सोचा था कांग्रेसी सामंती गठजोड़ गरीबों का शोषण, इस स्वतंत्रता के मायने क्या थे ? इस आजादी से किसे फायदा मिला ? इसके खिलाफ मुहिम चलाने की आवश्यकता थी अत: शील

जी बम्बई चले जाते हैं। वहां पार्टी का काम देखते हैं। और जीवन यापन के लिए पृथ्वी राज कपूर के साथ नाटकों और फिल्मों में काम करते हैं नाटक लिखते हैं। 1953 में 'उदयपथ' का प्रकाशन यहीं से हुआ, पार्टी ने इसे छापा। 1956 में शील जी पुनः कानपुर आ गये। गाँव के सामंत से निरंतर संघर्ष और सामंत द्वारा तीन बार किए गये प्राण घातक हमलों से शील जी हारे नहीं। तरह तरह की साजिशें और आर्थिक परेशानियों से जूझते रहे वे। उनका संघर्ष उनकी कविताओं में परिलक्षित है पूरी शिद्दत के साथ।

उनके दो बड़े कविता संग्रह बाद में आए 'लावा और फूल' तथा 'कर्म–वाची शब्द है यें। सुना है हाल ही में 'उर्वर धरती' नाम से एक संग्रह की प्रकाशित हुआ है। दो कहानी संग्रह और नाटक ग्रन्थावली भी प्रकाशित हुई है। यह सारा साहित्य हम धरती के इस अंक में प्रस्तुत नहीं कर सकते थे हमारी सीमाएं थीं। परन्तु उनकी चुनिंदा, कविताएं, कहानियां तथा लेख, साधारण पर महत्वपूर्ण पाठकों तक पहुंचाने की मुहिम हमने चलाई है ताकि लोग संघर्षशील, बलिदानी रचनाकारों से परिचित हो सकें। यह प्रयास छोटा है परन्तु पाठक इसे हमारे श्रम और आस्था को देखते हुए अपनेपन और स्नेह से स्वीकारेंगे इस अपेक्षा के साथ।

कोटा — शैलेन्द्र

15-4-90

वध के लिये चलो

कविताएं